Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

''श्रीरामरसायनम्'' काव्य की रामकथात्मक काव्यों से तुलना
(" SHREERAAMARASAAYANAM " KAAVY KEE RAAMAKATHAATMAK KAAVYON SE TULANA)

डॉ0 रुचि शर्मा [1]

[1] संस्कृत विभाग बी0 एस0 ए0 कॉलेज, मथुरा (उ0 प्र0) 9412130064

ABSTRACT:

भारतीय संस्कृत वाड़ मय में रामकथात्मक काव्यों का विशेष योगदान रहा है। रामकथात्मक काव्यों की शृंखला में श्री लक्ष्मण सिंह अग्रवाल कृत श्रीरामरसायनम् काव्य का भी सर्वोकृष्ट स्थान है। यह ग्रन्थ सात सर्गो में उपनिबद्ध एक श्रेष्ठ रामकाव्य है। इस काव्य में श्री रामकथा को अत्यन्त सूक्ष्म रूप में वर्णित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'श्रीरामरसायनम्' काव्य की अधतनीय रामकथात्मक काव्यों से तुलना काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर करना अपेक्षित है। इसके अन्तर्गत भावपक्ष एवं कलापक्षीय तत्व के रूप में विध्मान क्रमशः रस, ध्वनि, छन्द, अलंकार, शैली, गुण, रीति आदि के आधार पर उक्त काव्य की रामकथात्मक काव्यों से तुलना को प्रदर्शित किया गया है।

KEYWORDS:

'श्रीरामरसायनम्' , 'हनुमद्दूतम्', 'हंससन्देशम्', 'जानकीचरणचामरम्', 'रामशतकम्', 'रामास्तवम्', रस, छन्द

''श्रीरामरसायनम्'' काव्य की रामकथात्मक काव्यों से तुलना के सन्दर्भ में इन काव्यों के भावपक्ष एवं कलापक्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना अपेक्षित है–

भाव पक्ष :–

भाव पक्ष की दृष्टि से रामकथात्मक काव्यों का अध्ययन करने पर विदित होता है कि प्राप्त रामकाव्यों में शृंगार, भक्ति एवं शान्त रस ही पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। शृंगार, भक्ति एवं शान्त यही तीन प्रमुख रूप से इन रचनाओं में प्रधान या अंगी रस के रूप में विद्यमान हैं। शृंगार के दोनों पक्षों में विप्रलम्भ शृंगार की प्रधानता सम्पूर्ण संदेशपरक काव्यों में है। संयोग शृंगार बीच–बीच में अंग होकर आ गया है। संयोग शृंगार प्रधान रचनायें भी मात्र **दो**–तीन ही प्राप्त होती हैं। जैसे 'जानकी परिणयम्', 'सीतास्वयंवरम्' आदि। 'हनुमद्दूतम्', 'कपिदूतम्', 'चन्द्रदूतम्', 'हंससन्देशम्', 'कोकिल सन्देशम्' आदि रचनायें विप्रलम्भ शृंगार प्रधान रचनायें हैं। 'रामविलापम' जो सद्यः 20वीं शती की रचना है, उसमें करुण **व्यंग्य** होकर अनुभूत होता है।

सन्देश काव्यों के अतिरिक्त रामकथा से सम्बन्धित विपुल काव्य स्तोत्रपरक रामकाव्य हैं। उन समस्त स्तोत्रकाव्यों में प्रायः भक्ति एवं शान्त रस ही अंगी है। अत्यधिक स्तोत्र तो भावप्रधान हैं। रस की गौणता पायी जाती है। जैसे 'जानकीचरणचामरम्' मुख्य रूप से भाव स्तोत्र है। कुछ आध्यात्मिक स्तोत्र हैं जहाँ निर्वेद की व्याख्या है वहाँ शान्त रस अंगी है।

अन्ततः कुछ रामकाव्य इस प्रकार के भी हैं जिसमें वीर रस अंगी हो गया है। इस प्रकार की रचनाओं में अपने आराध्यदेव के शक्ति–पराक्रम की प्रतिष्ठा एवं उसके शस्त्रों में से 'रामचापस्तवम्' एवं 'रामबाणस्तवम्' आदि मुख्य हैं।

अन्ततः समस्त रामकाव्यों को एक साथ दृष्टि में रखकर स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि इनमें शृंगार (दोनों पक्ष), भक्ति, शान्त, वीर एवं करुण रस की ही प्रधानता है। साथ ही भाव की भी प्रधानता पायी जाती है। रसादि सम्बन्धित भाव स्थिति इन काव्यों **में** विशेष रूप से बनती है। शृंगार एवं शान्त रस इन काव्यों की दृष्टि में पूर्व से ही विद्यमान **रहे** हैं।

उदाहरणस्वरूप रामकथात्मक काव्यों में सन्देशपरक काव्यों की अतिशयता होने के कारण विप्रलम्भ शृंगार ही अंगी रस के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है; तथापि संयोग शृंगार इन काव्यों में अपेक्षित होने नहीं पाया है। संयोग शृंगार 'जानकीपरिणयम्', 'सीतास्वयंवरम्', 'रामगीतगोविन्दम्', 'हनुमद्दूतम्' आदि ग्रन्थों में अंगी रस के रूप में तथा सन्देशकाव्यों में यह गौण रूप में दशनीय है।

संयोग शृंगार की परिपुष्टि के लिये वियोग शृंगार का होना परम अनिवार्य है। अतः सन्देशपरक काव्यों में वियोग शृंगार को अंगी रस के रूप में स्थान मिला है। यथा 'रामविलापम्' काव्य में वियोग शृंगार अंगी रस के रूप में प्रकट हुआ है।

रामकाव्यों में जितने भी प्रकार हैं प्रायः सभी में वीर रस का **दिग्दर्शन** होता है। कुछ काव्यों में यह रस अंगी रस के रूप में भी उपस्थित है। यथा 'रामचापस्तवम्' एवं 'रामबाणस्तवम्' आदि। 'रामविलापम्', 'रामकृष्णविलोमकाव्यम्', 'रामगीतगोविन्दम्' आदि काव्यों में यह रस गौण रूप में प्रयुक्त हुआ है।

रामकथात्मक काव्यों में अनेक स्थलों पर करुण रस की अतिसुन्दर अभिव्यंजना हुई है। 'हनुमद्दूतम्' में सीता–विलाप के अवसर पर करुण रस की अत्यन्त सुन्दर योजना हुई है। 'रामविलापम्' खण्डकाव्य और 'उत्तररामचरितम्' नाटक, तो करुण रस का मूर्त्तरूप है।

इन रामकाव्यों में शान्त रस की अन्तः सलिला अवश्य प्रवाहित **हुई** है। मुख्य रूप से स्तोत्रपरक रचनाओं में यह रस प्रयुक्त हुआ है। स्तोत्रों के अतिरिक्त संदेशपरक काव्यों में शान्त रस की अभिव्यक्ति हुई है। यथा 'हंससन्देशम्'। गीतिपरक रामकाव्यों में 'रामगीतगोविन्दम्' में भी यह रस पुष्ट हुआ है।

इन काव्यों में स्तोत्रपरक रचनायें अधिक मात्रा में हैं, जिनमें प्रायः भक्ति रस की अभिव्यक्ति करने वाली रचनायें हैं। यथा 'जानकीचरणचामरम्' में जानकी के प्रति कवि पूर्णतः रतिभाव से समर्पित है। अतः यहाँ भक्ति रस की अभिव्यक्ति हुई है। इसके अतिरिक्त 'रामशतकम्', 'रामाष्टाप्रासम्' एवं 'रामार्याशतकम्' आदि में राम से सम्बन्धित रति उद्बुध होने से ये भक्ति रस प्रधान रचनायें मानी जाती हैं। 'रामगीतगोविन्दम्' भी भक्ति रसपरक रचना है।

रामकाव्यों की इसी शृंखला में ''श्रीरामरसायनम्'' भी करुण रसपरक प्रधान रचना है। काव्य में शृंगार (दोनों पक्ष), वीर, भक्ति, वत्सल, रौद्र रस आदि गौण रूप में **दर्शनीय** है।

सम्पूर्ण रामकाव्यों का रस दृष्टि से विवेचन करने पर यह स्पष्ट है **कि** मुख्य रूप **से** शृंगार, करुण, वीर, शान्त एवं भक्ति रस को ही प्रधानता मिली है। इन्हीं रसों में से किसी एक रस को अंगी रस मानकर रचनाविधान सम्पन्न दिखाई देता है। शेष रस अंगरूप में प्राप्त होते हैं। परन्तु प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'अष्टौ रसाः' में से भयानक, वीभत्स, अद्भुत, हास्य एवं रौद्र रस की इन काव्यों में सर्वथा उपेक्षा हुई है, यह परिलक्षित होता है। हास्य, वीभत्स और भयानक रस तो गौण रूप में भी कहीं स्थान प्राप्त नहीं कर पाये हैं। हाँ, अद्भुत एवं रौद्र रस यत्र–तत्र स्तोत्रपरक स्तुतियों में गौण होकर उपस्थित हैं।

भाव पक्ष की दृष्टि से रामकथात्मक काव्यों **में** ध्वनि की सत्ता भी समन्वित रूप **से** दृष्टिगोचर होती है। कहीं रस व्यंग्य है तो कहीं अलंकार व्यंग्य है। किन्हीं काव्यों में वस्तुरूप व्यंग्य की स्थिति स्पष्ट होती है। साथ ही साथ एक ही काव्य के विभिन्न पद्यो में भी ध्वनि भेदोपभेद का **दिग्दर्शन** किया जा सकता है। लक्षणमूलक ध्वनि का कहीं भी अवलोकन नहीं होता है। हाँ, अभिधामूलक ध्वनि के संलक्ष्यक्रम व्यंग्य के भेदोपभेद का दर्शन अवश्य होता है।

''श्रीरामरसायनम्'' काव्य में वस्तु व्यंग्य होने के कारण वस्तुध्वनि **दर्शनीय** है। इसके अतिरिक्त भावध्वनि, रसध्वनि का भी **दिग्दर्शन** स्थान–स्थान पर हुआ है।

''श्रीरामरसायनम्'' काव्य प्रारम्भ में 'नत्वा'-शब्द के प्रयोग से नमस्कारात्मक रूप वस्तुध्वनि की प्रतीति हुई है। इसके अतिरिक्त चतुर्थ सर्ग में सीताविषयक स्मृति - आदि की अभिव्यंजना से वस्तुध्वनि हुई है।

रामकथात्मक काव्यों के अनेक पद्यों में ध्वनि लक्षित होती है, परन्तु सभी को उपस्थित कर पाना सम्भव नहीं है। कछ उदाहरण प्रस्तुत हैं, यथा 'हनुमद्दूतम्' पूर्वार्द्ध के तीसरे श्लोक **में** रसध्वनि, 28वें में भावध्वनि और उत्तरार्द्ध के 55वें श्लोक में भी रसध्वनि है। 'रामविलापम्' खण्डकाव्य में प्रथम श्लोक के पूर्वार्द्ध में 'जयति'शब्द के प्रयोग से नमस्कारात्मकरूप वस्तुध्वनि की प्रतीति होती है। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानों पर सीताविषयक स्मति आदि की व्यंजना होने से वस्तुध्वनि हुई है। साथ ही साथ गंगाविषयक रति होने से भावध्वनि की स्थिति मान्य है।

'रामगीतगोविन्दम्' भक्तिपरक रतिव्यंग्य होने से भावप्रधान रचना है। शेष इतर काव्यों में रस की सत्ता का अभाव है; चित्रपरक होने के कारण भाव भी प्राप्त नहीं होता है। वे सभी चित्ररहितविवक्ष रसालंकार की अपेक्षा से रहित होकर की गई रचनायें हैं। अतः इनमें भावान्वेषण करना व्यर्थ ही है। हाँ, रामपरक होने से भावध्वनि की कष्ट कल्पना सम्भव है।

कला पक्ष :–

कला पक्ष काव्य की वह कसौटी है, जिसके द्वारा किसी काव्य की उत्कृष्टता की परीक्षा की जाती है; क्योंकि इसके अन्तर्गत काव्य उत्कर्षाधायक समस्त तत्त्वों का निरूपण किया जाता है। जिस प्रकार किसी तरूणी के सौन्दर्य में अवयव रचना, वस्त्र, आभूषण आदि का सहयोग होता है, उसी प्रकार काव्य की सौन्दर्य वृद्धि में छन्द, अलंकार, गुण, रीति आदि तत्त्वों का अपार सहयोग होता है, जिनका अध्ययन हम कला पक्ष के अन्तर्गत करते हैं।

कलापक्षीय अध्ययन के अन्तर्गत ज्ञात होता है कि छन्द की दृष्टि से रामकथात्मक काव्यों में दो प्रकार की भावनायें पायी जा रही हैं। प्रथमतः कुछ रचनाये इस प्रकार की हैं जिनमें आद्योपरान्त एक ही छन्द का प्रयोग कवि ने किया है। एक छन्द में सम्पूर्ण रचना करने की प्रवृत्ति या भावना जो महाकाव्यों की सर्ग पद्धति पर है। द्वितीय परम्परा में कुछ रचनायें इस प्रकार की प्राप्त हुई हैं जिनमें एक ही रचना में अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया है। रचना के मध्य में छन्द परिवर्तन से स्वाद परिवर्तित करने की दृष्टि भी देखी जाती है। इस प्रकार छन्द रचना की दृष्टि से सम्पूर्ण रामकथात्मक काव्यों को दो भागा में विभाजित किया जा सकता है

प्रथम एक छान्दस रचना– इसके अन्तर्गत 'रामशतकम', 'रामबाणस्तवम', 'रामचापस्तवम', 'रामबाणशतकम्', 'रामाष्टाप्रासम' एवं प्रायः सभी सन्देशपरक रचनायें हैं; **जिनमें** आद्योपरान्त एक छन्द का प्रयोग सफल है। द्वितीय बहुदछान्द रचनाओं के उदाहरणस्वरूप हम उपरोक्त काव्यों के अतिरिक्त शेष समस्त काव्यों की गणना कर सकते हैं। इसी श्रेणी के अन्तर्गत 'श्रीरामरसायनम्' भी आता है। रामकथात्मक द्विसंधात्मक लघुकाव्य, श्लेषकाव्य, यमककाव्य, विलोमकाव्य एवं अन्य पाप्त स्तोत्रकाव्यों में बहुछन्दों का प्रयोग किया गया है। हाँ, 'जानकीचरणचामरम्' नामक स्तोत्रग्रन्थ के विषय में कुछ प्रसिद्ध श्रेष्ठ विद्वानों ने अपने ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के इतिहास में कहा है कि इस रचना **के** लिये यह कथन सर्वथा असत्य है। सम्पूर्ण स्तोत्र शिखरिणी छन्द में न होकर श्लोक संख्या एक से आठ तक शार्दूलविक्रीड़ित छन्द तथा शेष में शिखरिणी छन्द है। इन रामकाव्यों में प्रायः निम्नलिखित छन्दों का प्रयोग किया गया है– मन्दाक्रान्ता, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीड़ित, शिखरिणी, बसन्ततिलका, अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, वियोगिनी, पुष्पिताग्रा व रथोद्धता आदि।

यथा वेदान्तदेशिक कृत 'हंससन्देशम्' एवं नित्यानन्द शास्त्री विरचित 'हनुमद्दूतम्' आदि रचनाओं में मन्दाक्रान्ता छन्द आद्योपरान्त प्रयुक्त हुआ है। अन्य अनेक काव्यों में यत्र–तत्र भी इस छन्द का प्रयोग किया गया है।

आचार्य सोमेश्वर कृत 'रामशतकम्' स्रग्धरा छन्द में निबद्ध है। केशवभट्ट कृत 'रामशतकम्' में भी स्रग्धरा छन्द का प्रयोग हुआ है। उपरोक्त छन्द रामकथात्मक स्तोत्रपरक काव्यों में कहीं स्वतन्त्र रूप से तथा कहीं परतन्त्र रूप से बीच–बीच में प्रयुक्त हुआ है।

रामभद्रदीक्षित विरचित 'रामचापस्तवम्', 'रामबाणस्तवम्' एवं 'रामाष्टाप्रासम्' इन काव्यों की रचना शार्दूलविक्रीड़ित छन्द में आदि से अन्त तक हुई है। 'जानकीचरणचामरम्' में भी श्लोक संख्या एक से आठ तक यही छन्द प्रयुक्त है।

शिखरिणी छन्द रामकथात्मक लघुकाव्यकारों को बहुत अधिक प्रिय है, इसोलिये श्रीनिवासाचार्य ने 'जानकीचरणचामरम्' में शिखरिणी का प्रयोग किया है। यद्यपि क्षेमेन्द्र ने सीमावर्णन में शिखरिणी छन्द को प्रशस्तर माना है - तथापि भगवती सीता के चरणों की स्तुति में इस छन्द का प्रयोग चन्द्रमा में अमृतबिन्दु के समान चमत्कार उत्पन्न करता है। देवो के सम्मुख होकर शिखरिणी छन्द में स्तुति पाठ उसी प्रकार लगता है जैसे कोई मन्द–मन्द गति से चामर डुला रहा हो। इसीलिये श्रीनिवासाचार्य जी ने अपने इस शतक का नाम ही सम्भवतः 'जानकीचरणचामरम्' रखा होगा। आचार्य केशव विरचित 'रामशतकम्' में भी यत्र–तत्र यह छन्द प्रयुक्त है।

रामकथात्मक काव्यों में जहाँ कहीं भी वीर तथा रौद्र रस का प्रतिपादन है वहाँ बसन्ततिलका छन्द का प्रयोग प्रायः हुआ है। छन्दबहुला रचना करने **वाले** रामकाव्यों में भी अनेकों कवियों ने बसन्ततिलका छन्द से अपनी कविता–वनिता को सजाया है। केशव के 'रामशतकम्' में लगभग छब्बीस श्लोकों में बसन्ततिलका छन्द का प्रयोग हुआ है। स्वतन्त्र रूप से सम्पूर्ण रचना में भी यत्र–तत्र इस छन्द का प्रयोग पाया जाता है, परन्तु वीर एवं रौद्र रस का प्रतिपादन सम्पूर्ण रचना में कहीं नहीं है, जैसे 'रामविलापम्' खण्डकाव्य में। अनुष्टुप छन्द का प्रयोग भी रामकाव्यों में प्राप्त होता है। यथा 'रामकृष्णविलोमकाव्यम्' में इस छन्द का प्रयोग हुआ है।

रामकथात्मक काव्यों में कोई भी काव्य ऐसा नहीं है जिसमें आद्योपरान्त इन्द्रवज्रा छन्द का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग हुआ हो, यत्र–तत्र मुक्तकरूप से इसका प्रयोग अनेक रचनाओं में अवश्य किया गया है। केशव के 'रामशतकम्' एवं दैवज्ञसूरि के 'विलोमकाव्यम्' आदि काव्यों में इसका प्रयोग द्रष्टव्य है। रामकथात्मक काव्यों में पुष्पिताग्रा नामक छन्द भी प्रयोग किया गया है। केशव के 'रामशतक'के उन्नीस श्लोकों में यह छन्द प्रयुक्त है।

इस प्रकार रामकथात्मक काव्यों में छन्दों की शृंखला में वियोगिनी छन्द भी प्रयुक्त हुआ है। कवि लक्ष्मण सिंह अग्रवाल कृत 'श्रीरामरसायनम्' में आद्योपरान्त वियोगिनी छन्द का प्रयोग हुआ है। ग्रन्थकार का अभीष्टतम छन्द वियागिनी ही है। यह छन्द काव्य में उपकारक सिद्ध हुआ है। वियोगिनी छन्द के पश्चात् ग्रन्थकार का प्रिय छन्द अनुष्टुप है; क्योंकि अनुष्टुप छन्द के अनेक उदाहरण काव्य में द्रष्टव्य हैं। इसके अतिरिक्त यत्र–तत्र शिखरिणी मन्दाक्रान्ता रथोद्धता मालिनी बसंततिलका पुष्पिताग्रा शार्दूलविक्रीड़ित स्रग्धरा आदि छन्दों का भी सफल प्रयोग हुआ है।

तत्पश्चात् अलंकारों की दृष्टि से रामकथात्मक काव्यों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इन काव्यों में शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों का यथास्थान संगत प्रयोग हुआ है। रामकाव्यों में कुछ प्रमुख अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त कुशलता के साथ किया गया है। यथा नित्यानन्द शास्त्री विरचित 'हनुमद्दूतम्', वेदान्तदेशिक कृत 'हंससन्देशम्', कृष्णप्रसाद कृत 'रामविलापम्', श्रीनिवासाचार्य विरचित 'जानकीचरणचामरम्', केशवकृत 'रामशतकम्' आदि काव्यों में उपमा, रूपक, अनुप्रास, विरोधाभास, दीपक, अनुमान, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, विभावना, विशषोक्ति, अतिश्योक्ति, **निदर्शना**, दृष्टान्त, अर्थापत्ति, सहोक्ति, अपह्नुति, समासोक्ति, अप्रस्तुत **प्रशंसा**, अर्थान्तरन्यास, स्वाभावोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग सफल रूप से हुआ है।

उदाहरणस्वरूप 'रामकृष्णविलोमकाव्यम्' में यमक, पुनरूक्तवदाभास अलंकार का प्रयोग है तो 'रामगीतगोविन्दम्' काव्य में उपमा, रूपक, विनोक्ति, परिणाम, विभावना आदि अलंकारों का प्रयोग है।

'श्रीरामरसायनम्' में अलंकारों का प्रयोग अधिकाधिक रूप में नहीं हुआ है परन्तु यथास्थान अलंकारों का प्रयोग अवश्य हुआ है। काव्य में उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, पुनरूक्ति प्रकाश, स्मरण, स्वाभावोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग सफलतापूर्वक सिद्ध हुआ है।

तदनन्तर **रचनाशैली** की दृष्टि से रामकथात्मक काव्यों का आद्योपरान्त अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्रायः इन काव्यों में कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति होने के कारण अल्पसमास या समासरहित, सरस, मृदु वर्णों एवं शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन रचनाओं में सन्देशात्मक काव्यों की

अधिकता **है** जिनमें प्रायः मन्दाक्रान्ता छन्द प्रयुक्त है। अतः सन्देशात्मक रचनायें वियोगजन्य होने के कारण भी प्रसाद गुण, पाञ्चाली रीति तथा माधुर्य गुण वैदर्भी रीति से युक्त है। मन्दाक्रान्ता में रचित होने के कारण ही इनकी शैली ओजगुण एवं गौणी रीति से युक्त नहीं हो सकी **है**। इसी प्रकार सर्वाधिक मात्रा में स्तोत्रात्मक काव्य भी प्राप्त हुये हैं। उन स्तोत्रात्मक रामकाव्यों की रचना भी प्रायः प्रसाद गुण एवं पाञ्चाली रीति में की गई है। इन स्तोत्रों में अपने हृदय की दीनता के उद्घाटन हेतु कोमल शब्दों के माध्यम से वास्तविक भावुकता का परिचय भक्त कवियों ने प्रस्तुत किया है। भक्तिपरक होने के कारण प्रायः सभी रामकथात्मक स्तोत्रों की शैली सरस, सरल व प्रसादयुक्त है; गौण रूप से वैदर्भी का भी पुट भी आता रहा है। इन रचनाओं में चित्त द्रवीभूत करने वाली शक्ति है, मोहकता है, संगीत का पुट है। इसी कारण इनकी भाषा अत्यन्त सरल एवं सरस है, शैली प्रसाद गुण युक्त है। हाँ, कुछ स्तोत्र इसके अपवाद स्वरूप भी प्राप्त हुये हैं जिनमें वीर एवं रौद्र रस की चर्वणा है एवं उनकी शैली 'रामबाणस्तवम्', 'रामचापस्तवम्' एवं 'रामाष्टाप्रासम्' आदि रचनाओं में श्रीराम के शस्त्रों की वन्दना एवं **प्रशंसा** है। अतः इनकी शैली ओजगुण युक्त हो गई है। उसमें ट, ठ, ड, ढ जैसे कठोर वर्णों का प्रयोग अधिक हुआ है।

कुछ रचनायें 'गीतगोविन्दम्' की शैली में भी रचित हैं। यथा– 'रामगीतगोविन्दम्', 'संगीतरघुनन्दनम्' आदि। इनकी भाषा अत्यन्त सरस, सरल एवं प्रवाहमय है। इनमें भी प्रसाद गुण मुख्य रूप से एवं मध्य में यत्र–तत्र माधुर्य व वैदर्भी के दर्शन हो जाते हैं।

रामकथात्मक काव्यों में जो रचनायें द्विसंधानात्मक, यमक, श्लेष, प्रधान या विलोमकाव्य के रूप में निर्मित **है**। उनकी भाषा एवं शैली में दुरूहता एवं क्लिष्टता के **दर्शन** अवश्य होते हैं। परन्तु ये रचनायें चित्रात्मक हैं। उनमें क्लिष्टता का आ जाना स्वाभाविक है।

उदहारणस्वरूप काव्यों में 'हनुमद्दूतम्' और 'हंससन्देशम्' की शली मधुर एवं वैदर्भी रीति से युक्त है। 'रामविलापम्' खण्डकाव्य की भाषा अत्यन्त सरस, सरल एवं बोधगम्य है। सम्पूर्ण रचना प्रसाद गुण एवं पाञ्चाली रीति से युक्त है। इसी प्रकार 'चन्द्रदूतम्', 'कोकिल संदेशम्', 'भ्रमरदूतम्', 'कपिदूतम्' आदि सन्देशपरक काव्यों की शैली माधुर्य एवं प्रसाद गुण से युक्त तथा वैदर्भी वृत्ति से परिपूर्ण है। इन संदेशपरक काव्यों में कहीं भी ओजपूर्ण गौणी रीति का **स्पर्श** नहीं हो पाया है।

मुक्तकगीतिपरक काव्यों 'रामगीतगोविन्दम्','गीतराघवम्', 'जानकीगीताम्' एवं 'संगीतरघुनन्दनम्' आदि हैं। इन रचनाओं की काव्य शैली मुख्य रूप से पाञ्चाली रीति एवं प्रसाद गुण युक्त है। अधिक से अधिक पद्य इसी शैली में रचित हैं। गौणरूप से वैदर्भी रीति एवं माधुर्य गुण भी यत्र–तत्र दर्शित होते हैं। बीच–बीच में माधुर्यगुण की झलक भी प्राप्त होती रहती है।

स्तोत्रपरक काव्यों में सोमेश्वरकृत 'रामशतकम्', केशवकृत 'रामश तकम्', इसके अतिरिक्त 'वर्णमाणास्तोत्रम्', 'जानकीचरणचामरम्', 'रामाष्टाप्रासम्', 'रामबाणस्तम्', 'रामचापस्तवम्' आदि काव्यों की शैली प्रसाद गुण एवं पाञ्चाली रीति से युक्त है। इसी प्रकार शैली की दृष्टि से उपर्युक्त स्तोत्रों के अतिरिक्त भी रामार्याशतकम्, 'रामयुगलस्तवम्' आदि का अध्ययन करने पर उनकी शैली प्रसादगुणोपेत एवं पाञ्चाली रीति ही कही जा **सकती** है। अपवादस्वरूप ही किसी–किसी **स्तोत्र** की शैली जटिल प्रौढ़ होकर गौडी वृत्ति तथा ओजगुणोपेत बन गई है।

संदेशपरक, स्तोत्रपरक एवं गीतिपरक रामकाव्यों के अतिरिक्त रामकथा से सम्बन्धित श्लेषकाव्य, यमककाव्य, नीतिकाव्य, विलोमकाव्य आदि काव्य भी अधिक संख्या में रचित हैं। इन काव्यों की शैली दुरूह एवं क्लिष्ट अवश्य है परन्तु यह दुरूहता काव्य एवं कवि के उद्देश्य के अनुरूप है।

'श्रीरामरसायनम्' काव्य का शैली की दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इस काव्य की मुख्य शैली माधुर्य गुण व वैदर्भी रीति से युक्त है। मधुर शैली के द्वारा ही कवि चमत्कारी उपमाओं की मात्रा प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

अस्तु, संक्षेप में भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से उपरोक्त विवेचन के आधार पर 'श्रीरामरसायनम्' काव्य की अद्यतन रामकथात्मक काव्यों से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि इनके मध्य समता और विषमता के पर्याप्त आधार हैं। समीक्ष्य काव्य के कवि और अद्यतन रामकथात्मक काव्यों के कवि पूर्णतः समर्पित श्रीरामभक्त हैं। इन कवियों ने श्रीराम की लीलाओं को अपना वर्ण्यविषय बनाया है। काव्य शैली और लीला विस्तार की दृष्टि से यह काव्य अद्यतन रामकाव्यों में पर्याप्त वैषम्य है। 'श्रीरामरसायनम्' काव्य में श्रीराम की समस्त लोलाओं का अति संक्षिप्त रूप में वर्णन है। जबकि अद्यतन रामकाव्यों में श्रीराम की सभी लीलाओं का संक्षिप्त वर्णन तो हुआ ही है इसके साथ–साथ किसी विशेष लीला का सविस्तार तथा सांगोपांग वर्णन भी हुआ है। आलोच्य काव्य प्रभु के लोकरंजक व लोकरक्षक रूप की झाँकी भी प्रस्तुत करता है जोकि अद्यतन रामकाव्यों के समान ही है।

अद्यतन रामकथात्मक काव्यों के शृंगार वर्णन में कुछ स्थलों पर माँसलता का चित्रण भी हुआ है, जबकि आलोच्य काव्य के कवि की लेखनी ने सीमा का उल्लंघन नहीं किया है। यह काव्य समान रूप से रसमय है। रामकाव्यों में श्रगार, भक्ति, वीर, करूण, शान्त रस अंगी रस के रूप में प्रयुक्त हुये हैं तो 'श्रीरामरसायनम्' काव्य का अंगी रस करूण रस ही है। इस प्रकार काव्य–सौन्दर्य, महत्व, लीला–प्रदर्शन, भक्ति–भावना आदि की दृष्टि से समीक्ष्य काव्य और अद्यतन रामकाव्य महत्वपूर्ण एवं उपादेय हैं।

जहाँ तक कलापक्षीय तत्वों के समावेश की बात है, इस विषय में यही कहा जा सकता है कि अद्यतन रामकाव्यों में अलंकारों का प्रयोग जिस प्रचुर मात्रा में किया गया है, उतनी मात्रा में अलंकारों की प्रचुरता समीक्ष्य काव्य 'श्रीरामरसायनम्' में नहीं है। इस प्रकार जब हम छन्द योजना पर दृष्टिपात करते है तो विदित होता है कि अद्यतन रामकाव्यों में जिन छन्दों का प्रयोग किया गया है उन छन्दों का प्रयोग समीक्ष्य काव्य के कवि श्री लछमन सिंह ने किया है, परन्तु जितनी मात्रा में अद्यतन रामकाव्यों में छन्दों का प्रयोग हुआ है उतनी मात्रा में श्री लक्ष्मण सिंह जी ने नहीं किया है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अद्यतन रामकाव्यों की अपेक्षा 'श्रीरामरसायनम्' में छन्दों की न्यूनता है। ऐसा समझना एक महती त्रुटि होगी। जो आकर्षण श्री लक्ष्मण सिंह जी के काव्य में है, उसे काव्यरस के मर्मज्ञ रसिकजन ही अनुभव कर सकते हैं।

निष्कर्षतः 'श्रीरामरसायनम्' काव्य की अद्यतन रामकथात्मक काव्यों से तुलना करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि समीक्ष्य काव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष के वे सभी तत्व विद्यमान हैं जो अद्यतन रामकाव्यों में विद्यमान हैं। कहीं भी किसी पकार की न्यूनता के लिये अवसर–नहीं है। अलंकार हो या छन्द, गुण हो या रीति, रस हो या ध्वनि, सभी का यथोचित सन्निवेश किया गया है, जिससे यह काव्य विद्वानों के आकर्षण का प्रधान केन्द्र बन गया है। यही कारण है कि इसका स्थान सर्वोकृष्ट है।

REFERENCES

1. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 1/1
2. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 4/1
3. हनुमद्दूतम् (पूर्वार्द्ध) : नित्यानन्द शास्त्री : श्लोक सं0–3
4. हनुमद्दूतम् (पूर्वार्द्ध) : नित्यानन्द शास्त्री : श्लोक सं0–28
5. हनुमद्दूतम् (उत्तरार्द्ध) : नित्यानन्द शास्त्री : श्लोक सं0–55
6. रामविलापम्, श्लोक सं0–1 का पूर्वार्द्ध
7. रामविलापम्, श्लोक सं0–22–24
8. रामविलापम्, श्लोक सं0–46–47
9. ''एक सौ ग्यारह षिखरिणी वृत्तों में यह जानकीचरणचामर समाप्त है''– संस्कृत साहित्य का इतिहास : आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ0 सं0–358
10. उपपन्नपरिच्छेदकाले शिखरिणीमता : सुवृत्त तिलकम्, 3/20
11. बसन्ततिलकं भाति संकरे वीररौद्रयोः। सुवृत्त तिलकम्, 3/19
12. रामशतकम्: केशवदास, श्लोक सं0–23–26, 49, 50, 60–64, 66, 71, 73, 82–92
13. रामविलापम्, पूर्वार्द्ध, 9/21
14. रामकृष्णविलोमकाव्यम्, श्लोक सं0–9
15. रामशतकम्: केशवदास, श्लोक सं0–11, 39
16. रामकृष्णविलोमकाव्यम्, श्लोक सं0–9
17. रामशतकम्: केशवदास, श्लोक सं0–20
18. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 1/10, 2/6, 4/3, 5/13
19. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 1/1, 1/13, 2/1, 3/1,
20. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 4/30
21. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 5/39
22. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 7/70
23. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 2/69
24. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 6/47
25. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 1/64
26. श्रीरामरसायनम् : लक्ष्मण सिंह अग्रवाल, 7/69